16

''थोड़ी देर'' में

(यूहन्ना 16)

''थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे, और फिर थोड़ी देर में तुम मुझे देखोगे। तब उसके कितने चेलों ने आपस में कहा, यह क्या है, जो वह हम से कहता है, कि थोड़ी देर में तुम मुझे न देखोगे, और फिर थोड़ी देर में तुम मुझे देखोगे? और यह इसलिए कि मैं पिता के पास जाता हूं? तब उन्होंने कहा, यह थोड़ी, देर जो वह कहता है, क्या बात है? हम नहीं जानते, कि क्या कहता है।...'' (आयतें 16-24)।

यीशु ने अपने प्रेरितों को कुछ बात के लिए जो उनके सामने निकाली थी ब्यान करने के लिए करुणा से भरी बातचीत के एक सिलसिले में बताना चुना, जिसकी समीक्षा हमारे लिए यूहन्ना रचित सुसमाचार में दर्ज की गई। (देखें अध्याय 13 से 16.) यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने की उस बड़ी त्रासदी के आने पर यीशु ने विचारशील याद दिलाने वाली बातों, भविष्य की योजनाओं और ईश्वरीय शान्ति से उनके मनों को मज़बूत किया। यह प्रोत्साहन देते हुए (16:16-24) यीशु ने उन्हें विशेषकर दोहरे भविष्य के लिए मज़बूत किया जिसमें एक तो वह था जो शीघ्र होने वाला था और एक दूर क्षितिज में लटक रहा था।

उसका मुख्य विचार ''थोड़ी देर'' वाक्यांश में समाया हुआ था जो ऐसी अभिव्यक्ति है जिसका इस्तेमाल इन नौ आयतों में उसके या प्रेरितों द्वारा सात बार किया गया। पृथ्वी पर यीशु की सेवकाई और छुटकारे की महान योजना का समापन होने को था जिसे पूरा करने के लिए वह अपनी पूरी सेवकाई में लगा हुआ था अब वह वास्तविकता में बड़ी होने वाली थी। समय किसी की राह नहीं देखता पर हर कोई उस समय का जो उसके पास है थोड़ा सा अंश प्रभावशाली ढंग से इसे पूरा कर सकता है। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को अपनी सेवकाई के लिए परमेश्वर की मंशा को पाने के लिए छह महीने से एक साल का समय मिला था और यीशु को उस काम को करने के लिए जो उसे दिया गया था लगभग 3½ साल मिले थे। स्पष्टतया इस गुरुवार की शाम मनुष्य का पुत्र समय के बीतने और उसके काम के अपने चरम तक पहुंचने के ढंग के प्रति सचेत था। वह उस अन्त के लिए जो आने वाला था अपने प्रेरितों को तैयार करना चाहता था।

16:16-62 में ''थोड़ी देर'' वाक्यांश से यीशु का क्या अभिप्राय था? इसके अर्थ में हम देखते हैं कि यीशु ने सारी मनुष्यजाति के लिए क्या किया।

एक पूरा हुआ उद्धार

वह कह रहा था, ''थोड़ी देर में तुम्हें पूरा हुआ उद्धार मिलेगा।'' ''थोड़ी देर में,'' यीशु ने कहा, ''मुझे न देखोगे'' (16:16क)। पृथ्वी से उसका जाना अर्थात अपने चेलों से उसकी शारीरिक उपस्थिति को छोड़ना यह प्रगट करता था कि उसने छुटकारे का अपना काम पूरा कर

लिया है। उसकी बातों का अर्थ था कि उसका काम लगभग पूरा हो चुका है और मसीही युग के लिए यीशु की योजना अमल में आने वाली थी।

उसके संक्षिप्त वाक्यांश ''थोड़ी देर'' के संकेत के अनुसार, अब तक की लगभग सबसे बड़ी घटनाएं होने वाली थीं। एक घण्टे या थोड़ी और देर में गिरफ्तार करने वाली भीड़ उसे पकड़ने, उस पर मुकद्दमा करने और उसे क्रूस पर चढ़ाने के लिए आ गई। अपनी मृत्यु के बाद यीशु ने तीन दिन कब्र में रहकर और फिर मुर्दों में से जी उठकर और चालीस दिन तक दिखाना था कि वह जीवित है। फिर उसने पिता के पास ऊपर उठाया जाना था। इन घटनाओं के वास्तविक महत्व का संसार में किसी को पता नहीं होगा। यीशु ने हमारे उद्धार के लिए अपने काम को जल्द पूरा कर लेना था और कलीसिया के मुखिया के रूप में शासन करने लिए पिता के दाहिने हाथ बैठने के लिए स्वर्ग में लौट जाना था।

कलीसिया का खरीदा जाना और संसार पर उद्धार के लिए अवसर देना एक यातनामय अर्थात बलिदानपूर्वक कीमत से हुआ था। स्वर्गदूत बेशक इससे सहमत थे पर ''संसार इससे अनजान था।'' जिस व्यक्ति ने इस अनन्त जीवन को जो यीशु देता है नहीं पाया है उसने मनुष्य के लिए स्वर्ग के सबसे ऊंचे उपहार से मुंह फेर लिया। ''थोड़ी देर'' बीत चुकी थी और ''उद्धार का दिन'' आ गया है। आइए हम यह सुनिश्चित कर लें कि हम इस कीमत को नज़रअन्दाज़ न करें।

अखण्ड संगति

वह कह रहा था, ''थोड़ी देर में न खत्म होने वाली संगति के लिए।'' हम पढ़ते हैं, ''और फिर थोड़ी में'' (16:16क)। यीशु की बातों का अर्थ वह संगति होगा जिसकी प्रतिज्ञा उसने जातियों में अपने सुसमाचार को मनाए जाने वालों के साथ की (मत्ती 28:20)। प्रेरितों ने उसके ऊपर उठाए जाने के बाद फिर से उसकी उपस्थिति में होना था, वे इस बात से अवगत थे कि वह गैर शारीरिक ढंग से अर्थात आत्मिक रूप में उनके साथ रहेगा। पवित्र आत्मा को भेजा जाना था ताकि यीशु इस आत्मिक अर्थ में उनके साथ रह सके। आत्मा में उनके प्रचार करने और लिखने और सेवा करने में अगुआई देते हुए उन्हें सब सत्य का मार्ग दिखाना था। उसकी अगुआई के द्वारा उन्होंने इस बात से परिचित होना था कि वे यीशु की इच्छा, स्वीकृति और उपस्थिति में बने हुए हैं।

केवल आत्मा की अगुआई में चलने वाला व्यक्ति ही यीशु की आत्मिक उपस्थिति को जान सकता है। आत्मा हमारे अन्दर यीशु अर्थात कलीसिया के प्रभु को महिमा देने के लिए रहता है। जो व्यक्ति यीशु की उपस्थिति को नहीं जानता वह उस सब से बड़ी संगति से चूक गया है जो किसी को मिल सकती है।

अनन्त आनन्द

वह कह रहा था, ''थोड़ देर में, तुम्हें अनन्त आनन्द मिलेगा।'' यीशु ने घोषणा की:

> मैं तुम से सच सच कहता हूं; कि तुम रोओगे और विलाप करोगे, परन्तु संसार आनन्द करेगा: तुम्हें शोक होगा परन्तु तुम्हारा शोक आनन्द बन जाएगा। जब स्त्री जनने लगती है तो उस को शोक होता है, क्योंकि उस की दुःख की घड़ी आ पहुंची, परन्तु जब बालक

जन्म चुकी तो इस आनन्द से कि जगत में एक मनुष्य उत्पन्न हुआ, उस सकट को फिर स्मरण नहीं करती। और तुम्हें भी अब तो शोक है, परन्तु मैं तुम से फिर मिलूंगा और तुम्हारे मन में आनन्द होगा; और तुम्हारा आनन्द कोई तुम से छीन न लेगा (16:20-22)।

अगले दिनों में प्रेरितों ने रोना और विलाप करना था जबकि संसार ने यह सोचकर कि यीशु की शिक्षाओं को पृथ्वी पर से हटा दिया गया है आनन्द करना था। परन्तु, समय के बीतने पर उन्हें समझ आना था कि उनके रोने का कारण ही उनके आनन्द का कारण बन गया। यीशु की मृत्यु जिससे संसार थोड़ी देर के लिए आनन्दित था, प्रेरितों के लिए अनन्त आनन्द का अवसर था। यीशु ने इस बदलाव की तुलना स्त्री के बच्चे को जन्म देने से की। स्त्री की जनने की पीड़ा बाद में उसके आनन्द का कारण बन जाती है; उसकी पीड़ा सुख में बदल जाती है जब वह अपने नन्हे बालक को अपनी गोद में लेती है और उसके जीवन में मां के रूप में आती है। बच्चे की उपस्थिति मां के लिए भरपूर आनन्द का कारण बनती है।

मसीहियत के अपनी सम्पूर्णता में स्थापित हो जाने के बाद, प्रेरितों ने अपने उद्धार अर्थात यीशु की संगति और अनन्त आशा में अखण्ड और बने रहने वाले आनन्द का अनुभव किया (सब मसीही लोग)। वे क्रूस, पुनरुत्थान और ऊपर उठाए जाने के कारण को और स्पष्ट ढंग से देख पाए थे। क्षमा, यीशु के साथ संगति और पवित्र आत्मा के आने से उनके मनों में स्वर्ग का आनन्द भर गया।

आनन्द हमेशा बड़ी वास्तविकताओं के बाद होता है। हम आनन्द तक अपने आप नहीं पहुंच सकते; बल्कि जब हम यीशु के पास आते हैं तो वह हमारे मनों में प्रवेश करके अपने साथ आनन्द ले आता है। संसार के किसी आनन्द की तुलना उस अनन्त आनन्द से नहीं की जा सकती जो यीशु देता है। यह परमेश्वर की क्षमा और यीशु की उपस्थिति से मिलता है और यह बना रहने वाला है।

सारांश

यीशु की बात ''थोड़ी देर'' जिसे इस संदर्भ में कितनी बार कहा गया है, में अब आगे को देखने की बात नहीं लगती; क्योंकि आत्मा की उसकी प्रतिज्ञा पूरी हो चुकी है। अपने मनों को उस पर लगाते हुए जो हो चुका है, हम उसके पीछे को देख सकते हैं जिसकी यीशु ने कल्पना की थी अर्थात उसकी मृत्यु, मसीहियत का आना, और यह सुख पूर्ण था यह घटनाएं उन लोगों के लिए हैं जो उस से प्रेम करते हैं और उस पर भरोसा रखते हैं। अब हम यह नहीं कहते कि ''क्या होने वाला है?'' इसके बजाय हम उसमें जो प्रभु का है आनन्द करते और उस नये और जीवित मार्ग में चलते हैं जो मसीह ने हमें दिया है!

''तब उन्होंने उसकी बात मान ली; और प्रेरितों को बुलाकर पिटवाया; और यह आज्ञा देकर छोड़ दिया, कि यीशु के नाम से फिर बातें न करना। वे इस बात से आनन्दित होकर महासभा के साम्हने से चले गए, कि हम उसके नाम के लिए निरादर होने के योग्य तो ठहरे। और प्रतिदिन मन्दिर में और घर-घर में उपदेश करने, और इस बात का सुसमाचार सुनाने से, कि यीशु ही मसीह है न रुके'' (प्रेरितों 5:40-42)।